© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 04 , Issue : 10 | October – December 2017

हिंदी पद्य साहित्य में नारी विमर्श एवं आधुनिक हिंदीसाहित्य- में नारी

सीमा, रिसर्च स्कॉलर

ISSN : 2348-5612 © URR

परिचय : हिंदी साहित्य में नारी विमर्श की जहां तक बात है तो बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से हमारे देश में जो नारीवादी आंदोलन हुए उन आंदोलनों से भारतीय साहित्य काफी प्रभावित हुआ है. इसकी पृष्ठभूमि के रूप में यूरोप और अमेरिका की जिस नारीवादी विचारधारा के प्रभाव के कारण ऐसा हुए है; वह स्वीकार करने के बावजूद कहा जा सकता है कि स्त्री विमर्श कभी तो संसार की समस्त नारियों द्वारा समस्त पुरुषों का विरोध करने वाली विचारधारा के रूप में उभरकर सामने आया तो कभी यह स्त्री की उन्मुक्त सेक्स की वकालत करने वाले साहित्य के रूप में सामने आया

आधुनिक हिंदीसाहित्य- में नारी, चेतना और सर्जना के बीचोंपश्चिम के बीच खड़ी दिखाई देती है।- प्रभाव के कारण इस काल में नई चेतना का विकास हुआ। हिंदी साहित्यकारों ने स्त्रीपात्रों के प्रति पूरी संवेदना के साथ - उनकी महानता का चित्रण किया है। औरतों को लेकर पिछले ५० वर्षों में काफी काम हुआ है। मगर समाज-शास्त्र की दृष्टि से स्त्रीसाहित्य में बहुत बाद में बहस का मुद्दा-विमर्श हिंदी- बना। डॉ ओमप्रकाश लिखते हैं –"सं १९७४ में 'प्रगतिशील महिला संगठन का गठन हुआ इसके बाद महिला मुद्दों को अख़बारों पत्रिकाओं आदि में प्रमुख स्थान मिलने लगा . वैदिक काल नारी का उत्कर्ष काल रहा है ,किन्तु धीरेधीरे समय- चक्र के परिवर्तन के कारण नारी के पराभव और शोषण का युग प्रारम्भ हो गया।.

हिंदी साहित्य का आदि गाथाओं-काव्य धार्मिक उपदेशों एवं वीर- के रूप में लिखा गया है। पहला वीरकाव्य के रूप में दूसरा मधुर भक्ति के रूप में। तत्कालीन परिस्थितियों एवं वातावरण के अनुसार वीरगाथा काल में नारी के कामिनी एवं वीरांगना रूप दृष्टिगत होते हैं। इस समाज के काव्य में जाकी बिटिया सुन्दर देखी ताहि पै जाए धरे हथियार . वाली कहावत चरितार्थ होती है उस समय स्त्री संघर्ष के बीज के रूप में थी क्योंकि स्त्रियों के कारण राजापत्नी अपने-के भी युद्ध हो जाते थे। वीर महाराजाओं- जीवन की सार्थकता अपने स्वामी के वीरोचित कर्मों में ही समझती थी। यदि उसका पति वीरगति को भी प्राप्त हो जाए तो वह उसके साथ ही मरने को तैयार हो जाती थी।

भक्ति काल के निर्गुण संत कवियों ने नारी को मुक्ति मार्ग की बाधा बताया है. कबीर का अभिमत है कि "नारी की छाया परत अँधा होत भुजंग।. अर्थात नारी की छाया पड़ते ही सांप भी अँधा हो जाता है। सुंदरदास के अनुसार, 'नारी विष का अंकुर ,विष की बेल है। . इन सबसे यही विदित होता है कि इन्होंने नारी के केवल कामिनी रूप को ही देखा है; उसके मातृत्व रूप एवं पतिपरायण रूप को नहीं। दूसरी और संत कवियों ने नारी के मातृत्व एवं पतिपरायण रूप को आदर की दृष्टि से देखा है। साथ ही तुलसीदास जैसे कवियों ने नारी को ताड़न का अधिकारी मानते हुए उसे पशुतुल्य स्वीकारा है, शायद ही ऐसा कोई कवि होगा जिसने स्त्रियों के प्रति इतने सम्मानजनक शब्दों का प्रयोग किया हो। सूफियों के अनुसार नारी प्रेम एवं उपासना की वस्तु है। उसे योग,

त्याग, तपस्या तथा उत्सर्ग द्वारा ही पाया जाता है। उसका प्रेम लौकिकअलौकिक दोनों ही है। सूरदास जी ने - अपने काव्य में विभिन्न रूपों, उनकी मान्यताओं और मूल्यों का सहज एवं यथार्थ चित्रण किया है। सूर ने नारी हृदय का मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। सूरसागर के प्रथम खंड में कृष्ण कथा वर्णन के पूर्व कवि नारी को नागिन से अधिक भयंकर मानता है और लिखता है कि 'नागिन का विष तो तभी व्याप्त होता है, जब वह काट लेती है, पर नारी अपनी दृष्टि विशेष मात्र से मानव मन को चेतनाहीन कर लेती है।

ऐसे समय में जहां नारी को नरक का द्वार, सर्पिणी, अध्यात्म में बाधक, पशुतुल्य जैसे उपमानों से अलंकृत किया जाता था। उस समय कृष्णभक्त मीराबाई का पितृसत्तात्मक समाज के विरुद्ध जाकर अपनी निजता के अनुरूप जीवन यापन करना बहुत आश्चर्य की बात की थी। मीरा की भावना, नारीत्व की भावना थी, जो पूर्णत्व चाहती थी। ऐसे काव्य में प्रेमविरह है-, विलास से अर्पित नारी का चित्र रुचिर तो लगता है किन्तु उससे नारी के स्वतंत्र व सक्षम अस्तित्व का बोध कदापि नहीं हो पाता और न उससे उसका समग्र व्यक्तित्व ही उभर पाता है।

भक्ति काल में कवियों की नारी विषयक दृष्टिकोण में उसे नागिन व नरक का द्वार कहा है तो दूसरी और अपनी-अपनी आत्मा को नारी रूप में अंकित किया है। एक और नारी को मुक्ति मार्ग की बाधा मानकर उसकी उपेक्षा की है और साथ ही यह भी स्पष्ट हो जाता है कि सामान्य नारी के प्रति इनका दृष्टिकोण उदार नहीं है।

रीतियुगीन कवियों ने रूपयौवन के आकर्षण की आंधी में नारी के रूप का ही- वर्णन किया है। कहींकहीं तो यह - स्वाभाविकता की सीमा का ही अतिक्रमण करती हुईहै सी प्रतीत हो जाती-. नारी ही रीतिकाल में कवि की समस्त भावनाओं का केंद्र है, परन्तु इन रीतिकवियों केशव, बिहारी, घनानंद, देव, मतिराम, सेनापति आदि को नारी का केवल कामिनी रूप ही प्रिय था। रीतियुगीन कवियों ने रूपयौवन के आकर्षण की आंधी में नारी के रूप - का ही वर्णन किया है, कहींसी प्रतीत हो-कहीं तो यह स्वाभाविकता की सीमा का ही अतिक्रमण करती हुई-जाती है नारी ही रीतिकाल में कवि की समस्त भावनाओं का केंद्र है, परन्तु इन रीति कवियों केशव, बिहारी ,घनानंद, देव, मतिराम, सेनापति आदि को नारी का केवल कामिनी रूप ही प्रिय था। रीतिकाल के कवियों की दृष्टि केवल नारी के ही नख शिख उसकी मांसल देह पर ही ठहरी थी-"सतरोही भौहें, अलसाह चितवन तन की खरीं निकाई . इन कवियों की दृष्टि में यशोदा के मातृत्व की गरिमा का कहीं भी स्थान नहीं था। अतःस्पष्ट है कि इन कवियों की दृष्टि हर समय वासना एवं विलास में ही रही । कविगण अपने आश्रयदाताओं की मनस्तुष्टि - साधना प्रमुख रूप से करते थे। रीतिकाल में तो नीतिकाव्य में भी तिय छवि को भवसागर के बीच की बाधा ही माना गया है। संत कवियों की ही भांति ही नीतिकाव्य के कवियों में भी नारी के सम्पर्क को त्याज्य बताया गया है। इन कवियों के लिए नारी पुरुष के समान स्वतंत्र न होकर एक मनोरंजन की सामग्री थी। रीतिकाल के कवियों ने तो नारी को सिर्फ एक प्रेमिका के रूप में ही वर्णित किया है। पत्नीत्व की गरिमा के दर्शन तो कहीं भी नहीं मिलते। इसी कारण रीतिकाल के कवियों की कविताएँ श्रृंगार रस पर ही आधारित थी। सेनापति, बिहारी, मतिराम आदि की दृष्टि तो नारी के नयन और उसके दैहिक सौंदर्य पर ही टिकी रही। इन कवियों की दृष्टि में

यशोदा के मातृत्व की गरिमा का कहीं भी स्थान नहीं था। अतःस्पष्ट है कि इन कवियों की दृष्टि हर समय वासना एवं विलास में ही रही। कविगण अपने आश्रयदाताओं की मनस्तुष्टि साधना प्रमुख रूप से करते थे। रीतिकाल में तो नीतिकाव्य में भी नारी को कहीं भी आदर नहीं मिला।

आधुनिक काल शुरू हो गया था। देश की स्थिति (से अब तक१९००सन) करवट बदलने लगी। अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार के कारण भारतीय समाज की विचारधारा में कुछ परिवर्तन आया और पाश्चात्य साहित्य में वर्णित मानवप्रेम ने भी इन कवियों को प्रभावित किया। श्रीमती एनी बेसेंट-, जी के. देवधर, ईश्वर चन्दर विद्या सागर, चन्दर सेन ,महात्मा गांधी आदि समाज सुधारकों ने भारतीय नारी की पतनोन्मुख अवस्था को सुधारने का प्रबल समर्थन दिया। भारतेंदु जी ने स्त्री शिक्षा के प्रचार हेतु-'बालबबोधिनि' न. मक पत्रिका का प्रकाशन किया तथा नरनारी समानता एवं नारी मुक्ति का नारा दिया।- इस युग में कवियों ने इस बात पर बल दिया है कि नारी ही मानव एवं समाज का सुधार कर सकती है। इस विषय में रायदेवीप्रसाद पूर्ण की निम्न पंक्तियाँ हैं - "नारी के सुधारे होत जग में प्रसिद्ध ,नारी के संवारे होत सिद्ध धन बल है।' कहने का तात्पर्य यह है कि आधुनिक काल में स्त्री को थोड़े सम्मान की दृष्टि से देखा जाने लगा। उसे 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' अर्थात माता और जन्म भूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है, कहा जाने लगा।

इस युग के कवियों में मानवतावादी परवर्ती स्त्रीपुरुष में समानता की- भावना, पीड़ितों के प्रति सहानुभूति एवं मानवीय आदर्शों के रूप में थी। इन कवियों ने राधाउनकी वंदना करते हुए प्रेम बताकर-को आदर्श कृष्ण के प्रेम - की है, साथ ही रीतियुगीन नायकनायिका क-े श्रृंगार, काम विलास आदि की निंदा भी की है।

अतः आधुनिक काल के कवियों ने अपनी कृतियों में नारी के महत्त्व की प्रतिष्ठा की आज की नारी में स्वाभिमान तथा आत्म समर्पण की भावना ही प्रमुख है। उसे आज अपने अधिकारों की चिंता है क्योंकि वह शिक्षित है नारी सृष्टि के अनादि काल- से ही मानव हृदय की रागात्मक वृत्तियों का प्रेरणा स्त्रोत रही है.

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1.समकालीन महिला लेखन ओमप्रकाश शर्मा .डा-; पृ२१ ., पूजा प्रकाशन, नई दिल्लीसंस्करण-; १९९

2. हिंदी साहित्य का इतिहास रामचन्द्र शुक्ल .डा-,पृ ८२ राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्लीसंस्करण -; १९९६

३मध्य युगीन -समकालीन हिंदी के पत्र साहित्य में नारी विषयक चिंतन . साहित्य में नारी भावना (लेख), उषा पाण्डेय, पृ ६८, भावना प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण; १९९३

4. हिंदी महाकाव्यों में नारी चित्रण श्याम सुन्दर व्यास .डा-, पृ१७८ . सुन्दरदाससुन्दर ग्रंथावली-, पृ ४३४ ., राधा पब्लिकेशननई दिल्ली-,संस्करण; १९७७

5. समकालीन हिंदी पत्रकरिता में हिंदी संदर्भ डा रमेश कुमार त्रिपाठी-, नमन प्रकाशन११०००२-नई दिल्ली -, प्रथम संस्करण; २००७

6. सेवा समर्पण, नारी विशेषांक, प्रताप लहरी प्रतापनारायण-मिश्र, पृ१६० ., सेवा कुञ्जनई दिल्ली-, संस्करण, अप्रैल २००४